जंगल

ISSN: 2583-8849
साहित्य रत्न ई-पत्रिका अगस्त2023 वर्ष1 अंक4

दिन भर टकराते रहे , पेड,टहनियां ,पात ।

मसला इतना था हवा , कहां गुजारे रात॥

वैसे तो निर्जन जगह , फिर भी इतना शोर ।

कानाफूसी कर रहे , पेड , .आ घुसे चोर ॥

पेड गुफ्तगू कर रहे , मस्ती में सब ओर ।

सुना लतायें हो गईं , अब इतनी तन खोर ॥

हवा क्या चली , हो गया , वृक्षों में टकराव ।

पात गिरे ,टूटी कई,,टहनी , दुखते गहरे घाव ॥

जग जंगल सा हो गया , जहां हिंस्र प्रतिरोध ।

सिमट गयी है जिंदगी , यहीं हुआ प्रतिरोध ॥

जंगल में कानून है , खुद का करो बचाव ।

हिंसा यदि करनी पडे , करलो मत घवराव ॥

हवा ,भूमि ,आकाश ,जल , तेज ,स्वयं अध्याय ।

संविधान है जिंदगी, यह संतों की राय ॥

जीवन क्यों संघर्ष है , इस पर हुआ विमर्श ।

जीना है तो किस लिये ,पता नहीं आदर्श ॥

कायनात के केंद्र में , क्यों मानव है जान ।

जवाला ऊपर ही उठे ,उस को इस का ज्ञान ॥

'संविधान' यदि वेद है ,
संविधान है 'वेद' ।

संविधान करता नहीं ,
संविधान में भेद ॥

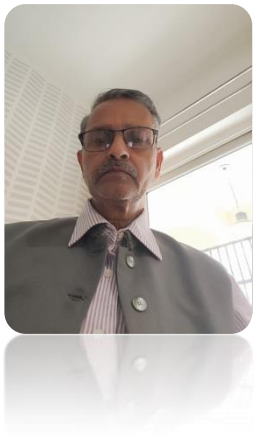

सोमदत्त शर्मा

जन्मतिथि- 15/02/1955

आई - 94

गोविंदपुरम

गाज़ियाबाद (उ. प्र.) 201013

मो. 8377003475